भावों के दीप

जीवन की झलकियाँ

डॉ. विजय कुमार भसीन

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Major (Dr.) Vijay Kumar Bhasin 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-998-5

Typesetting: Sagar

First Edition: November 2025

🏵 भूमिका
(Foreword)

जीवन के हर पड़ाव पर एक दीप जलता है —
कभी कर्तव्य का, कभी प्रेम का, कभी आस्था का, तो कभी त्याग का।
इन कविताओं में वही दीप झिलमिलाते हैं — भावों के, अनुभवों के,
और उस सैनिक हृदय के, जिसने युद्धभूमि में भी मानवता का प्रकाश देखा।

"भावों के दीप" केवल कविताओं का संग्रह नहीं —
यह एक सैनिक की आत्मा की आवाज़ है, जो राष्ट्र, समाज और जीवन के
हर रंग को अपनी संवेदना से प्रकाशित करता है।

✍ लेखक परिचय

मेजर (डॉ.) विजय कुमार भसीन (सेवानिवृत्त)

PhD, Diploma in UNO and Specialised in World Bank,
AI certification course from IIT Tirupati Author of Various
Books and Journals.

भारतीय सेना के एक गौरवशाली अधिकारी,
कारगिल के अनुभवी योद्धा और समाजसेवी।
देश की सेवा में आंशिक रूप से दिव्यांग हुए,
पर आत्मबल और संवेदना से आज भी समाज के लिए
प्रेरणास्रोत हैं।
वर्तमान में दिव्यांगजनों के उत्थान हेतु कार्यरत,
वे अपने लेखन के माध्यम से जीवन की झलकियों,
भावनाओं और देशप्रेम को शब्द देते हैं।

✨ प्रस्तावित अनुक्रम व वर्गीकरण

भाग 1: मानवता और समाज की पुकार 1
(1) असहाय को समर्पित.. 2
(2) ओ रिक्शेवाले… 4
(3) जाता हूँ सुबह-सुबह, जब अंधेरा होता है.................................... 6
(4) आओ, देखो — ये भी, यह भी एक बस्ती है 8
(5) मेरी बंद पलकें, मेरा ध्यान... 10
(6) जल, जीवन का सार.. 12
(7) पेड़ लगाओ हरयाली वापस लाओ , ... 14
भाग 2: देशभक्ति और सैनिक जीवन की झलकियाँ........................ 16
(8) एक बार नहीं, सौ बार — हम हैं तैयार 17
(9) मैं हूँ हिन्दुस्तानी वीर सिपाही.. 18
(10) वो घाटी फिर मुस्कुराएगी... 20
(11) शहीदों को नमन 22
(12) सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों, भिखारी पाकिस्तान की ये कहानी......... 24
(13) देखो कैसा है पड़ोसी मुल्क.. 26
भाग 3: अध्यात्म और जीवन दर्शन.. 28
(14) सुन प्रभु मेरी कहानी.. 29
(15) तेरे ही संकल्प से हमने जनम पाया, ... 31
(16) “मेरे बच्चों, ईश्वर तुम पर कृपा करें”....................................... 33
(17) तेरी राहों में चलता हूँ, तेरा सहारा साथ है,................................ 35
(18) नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार........................ 38
भाग 5: बचपन, गाँव और संस्कृति की खुशबू................................ 40
(19) वो गाँव की मिट्टी की खुशबू 41
(20) मिट्टी का रिश्ता 43

भाग 6: जीवन की खुशियाँ और उत्सव 45
(21) आओ आओ मुण्डयों–कुड़ियों आओ 46
(22) आओ मेरे अपने, गोवा की ओर..48
(23) आया भाई आया, लो भाई आया 50
भाग 7: जीवन की सच्चाई..52
(24) तेरे जाने के बाद..53
(25) ज़िंदगी का सफ़र..55

भाग 1:
मानवता और समाज की पुकार

(1)
असहाय को समर्पित

दुनिया में आया है तो कर गरीब का भला,
दुनिया में आया है तो कर गरीब का भला।
भला कर गरीब का, उसे मुस्करा भला।

उदार करके देख, रोटी एक रूखी-सूखी खिला के देख,
अरे कितनी बरकत, रहमत और खुशी बेशुमार मिलती है, देख।
अरे पगले! उसे कुछ तो दे, ना घटे कभी खज़ाना तेरा,
दान-पात्र में लगता कितना खर्चा तेरा।

आ ना पगले, देर किस बात की,
क्यों करता देर के साथ देर, अब डर किस बात की।
क्या खुशी का तोल मालूम ही नहीं,
कर भला जा जन्नत, जा अफलक जा,
आलम-ए-क़ुदस, इसका मज़ा तो लेता जा।

जान नहीं मांगी, मांगा ना पीज़ा,
ना मांगी चाँदी-अशर्फ़ी, मांगा ना ताज-महल,
क्यों उसे नहीं दे सकता तू, मेरे अज़ीज़ हमशीर।

सोच, क्या लगे तेरा? घटा क्या तेरा?
जो मांगा वो है रब का, ऐ मेरे हमशीर,
फिर देरी किस बात की?
ना रख सकता है एक दिन का फ़ाखा?

आ, आगे बढ़ — बढ़ता ही जा, देता ही जा।
कभी अंदाज़ लगा, भूखे पेट को खिलते जा।

ख़ुदा अक़्ल बाँट थोड़ी, तड़पाते हैं क्यों?
कुछ देने से तरसती आँखों को,
ग़रूर है क्यों, किस बात का?

बांटा कभी भी, कभी किसी वक्त तूने?
आएगी बारात तेरी भी खिलकर...

(2)
ओ रिक्शेवाले...

सुबह अंधेरे को ले जाता हूँ अपना रिक्शा,
निकलता हूँ घर से रोटी कमाने।
बीवी कहती — "जा, कुछ काम के ला",
गरीब था, गरीब हूँ, ना मिटेगी किस्मत की रेखा।

ओ रिक्शेवाले... तेरी मेहनत अमान है,
पसीने की हर बूँद ही तेरी पहचान है।
चलता जा, रुक मत, थक मत, हार मत,
तेरी सच्चाई ही तेरी शान है।

शाम को चौखट पर करते हैं इंतज़ार,
बच्चा पूछे — "पापा, क्या लाए हो इस बार?"
थका हुआ शरीर, पर दिल में अरमान,
एक से घर ना चले, बेटे का भी है सामान।

सुबह अंधेरे को ले जाता हूँ अपना रिक्शा,
निकलता हूँ घर से रोटी कमाने।

कभी सवारी गाली दे, पी जाता हूँ आँसू का घूँट,
कभी पुलिसवाला लूट ले पसीने का हर एक रूप।
फिर भी ईमान न डगमगाए,
गिरते हुए भी दिल मुस्कुराए।

एक दिन मिला रास्ते में भरा पर्स,
दिल नहीं ललचाया, लौटाया हक़ का हिस्सा।
उसने देना चाहा इनाम, पर हाथ न बढ़ा सका,
मेहनत की कमाई ही मेरे दिल को भा सका।

अब ना दूँगा बेटे को रिक्शा चलाने की मजबूरी,
भेजूँगा उसे स्कूल — यही है मेरी दूरी।
प्रभु से माँगूँ बस यही दुआएँ,
पढ़-लिखकर करे वो रोशन ये दुनिया।

ओ रिक्शेवाले… तेरी मेहनत अमान है, तेरी कहानी ही शहर की जान है।
पसीनों से सींची है तूने ये ज़मीं, तेरी तक़दीर ही कल का विधान है।

(3)
जाता हूँ सुबह-सुबह, जब अंधेरा होता है

जाता हूँ सुबह-सुबह, जब अंधेरा होता है,
खाली पेट कटोरा साथ, दिल रोता है।
ना देखूँ मौसम, ना देखूँ हालात,
गर्मी, सर्दी या हो बरसात।

जाता हूँ सुबह-सुबह, कुछ खाए बिना,
रब से माँगूँ बस रहमतें जीना।
जाता हूँ सुबह-सुबह, कुछ खाए बिना,
रब से माँगूँ बस रहमतें जीना।

बैठा हूँ राहों में, आस लगाए,
शायद कोई दानी योगी आ जाए।
घंटों बीतते, खाली हाथ ही,
भूखे सपनों संग कटती रात ही।

जाता हूँ सुबह-सुबह, कुछ खाए बिना,
रब से माँगूँ बस रहमतें जीना।
जाता हूँ सुबह-सुबह, कुछ खाए बिना,
रब से माँगूँ बस रहमतें जीना।

मिले ना भीख तो घर में बने ना रोटी,
बीमार माँ-बाबा की भी दवाई छूटी।
ऊपर वाले, तेरा ये कैसा कर्म,
घर की मेरी छत भी टूटी।

सुन ले कभी पुकार मेरी भी, मौला,
भर दे झोली, हो इस गरीब का भला।
जाता हूँ सुबह-सुबह, कुछ खाए बिना।

एक दिन ना जाने कहाँ से आया मेरा खुदा,
भर गया झोली खाली सुबह-सुबह।
"जल्दी घर आ, देख," माँ बोली,
"मिला नहीं क्या कोई दानी?"

भरी झोली देख, फिर माँ की आँखें रो लीं।
बीमार बाबा की भी आँखों में हसरत,
लगा कर गले फिर माँ बोली —
"शुक्र खुदा तेरा, जो तूने की गरीब पर बरकत।"

बाबा ने भी लगाया गले,
बोले — "अब भीख ना माँगने दूँगा कभी।
दाख़िला स्कूल में करवाऊँ तेरा,
होगा हर सपना अब पूरा तेरा।

पढ़-लिख कुछ काम करे,
जग में रोशन अपना नाम करे।"

जाता हूँ सुबह-सुबह, कुछ खाए बिना,
अब लौटेगा न वो अंधेरा कभी ना...
हाँ, लौटेगा न वो अंधेरा कभी ना।

(4)
आओ, देखो — ये भी, यह भी एक बस्ती है

आओ, देखो — ये भी, यह भी एक बस्ती है जहाँ सरीफ़ बनकर बदन नोचने आते हैं मस्ती में।
आओ, देखो — ये भी, यह भी एक बस्ती है जहाँ सरीफ़ बनकर बदन नोचने आते हैं मस्ती में।

मैं पैसे कमाने — एक सुंदर, कमजोर अबला हूँ; मुझे उस कश्ती में बिठा दिया,
और अपना ही दाम लगवाती हूँ — बन गई चीज मस्ती की नई।

अरे, पीड़ा तो सुने कोई ना; खुद को बचा सकूँ, ना आँसू बहा सकूँ।
अब कौन है सुनने वाला मेरी अरदास? करूँ किस से शिकवा-गिला? दुख — मेरी आवाज़ सुने ना कोई; घर नहीं, माँ-बहन-भाई नहीं।

भाग भी जाऊं, तो फिर वापस आना पड़ता है।
आंटी-बाई अलग — पिटे, करे बंद कोठरी में हफ्ता-हफ्ता; तू फिर भाग गई।
चिल्लाते-चिल्लाते, रो-रो कर पड़ जाती हूँ सारी रात; कहूँ तो कहूँ — किस्से दिल की दास्ताँ।

अब तो, खुदा तू भी क्यों हुआ नाराज़? खुदा देखता रहा, गवाह बनकर चुपचाप।
भेजा उसने फिर एक दूत — ग्राहक बनकर; आया एक सिपाही, आया वर्दी में।
बोला: "आया हूँ तुझे अपने साथ ले जाने को।"

ठुकराया मैंने उसे — बहुत देखे हैं तेरे जैसे; क्यों मन बहलाने आए हो?
तूने नहीं इतबार किया; "लौटूँगा कल सुबह-सुबह।"
देखा — सुबह सायरन बजती, आई पुलिस गाड़ी और चार सिपाही। बोला: "बैठों गाड़ी में।" तभी, रोती आवाज़ में बोली सारी: "ले जाओ ना हमें।"

अब पेश हुई थानेदार पर, कहा — पूछा: "बेटी, न घबराओ।"
खाना-पेट भर खिलाया; कपड़े ढंग के मँगवाए। बोला: "छोड़ कर आओ —
उसे अभी लाचार को आश्रम में।"

अब आया नया घर; न जाने कितने परिवार बदल चुकी हूँ।
अब हुई साल पूरे — बाईस की; और आया फिर से थानेदार। शादी पक्की
कराई एक सिपाही से; कन्यादान थानेदार ने किया।
देखा — कमिश्नर, सरकारी अफ़सरान, उद्योगपति आए बारी-बारी; मुझे मिला
लाखों का मोटा कन्यादन; सरकारी अफ़सरों ने सौंप दी चाबी एक घर की।

मेरे प्रभु, जब देन ही था, तो क्यों किया इतना लंबा इम्तिहान?
अब आख़िरी में एक ख्वाहिश माँगूँ तुझसे: जहाँ रह गई हैं, बदबू-गंदगी में मेरी
बहनें — बचा-छुड़ा ला उन्हें; यही अरदास माँगूँ, यही अरदास माँगूँ।

हर रात में सजती-संवरती, पर सिंदूर नहीं भरती।
हर शाम ये घोलते हैं मस्ती — शराब में, जैसे माँ-बहनों को कभी न देखा हो।

बचा उन्हें भी — नचाने से और शराब के नापाक महफ़िलों से।

(5)
मेरी बंद पलकें, मेरा ध्यान

मेरी बंद पलकें, मेरा ध्यान।
ना कहो मुझे नेत्रहीन, मैं सब कुछ देखता हूँ पूरा।

तुम्हारे कंधे बदलते हैं, मेरी लाठी का सहारा है पूरा।
कहाँ है राह, किधर है मोड़, कहाँ है रुकना — मुझे बताती है।
मेरी लाठी ही तो मेरी माँ है, जो हर कदम राह दिखाती है।

मदद नहीं चाहिए मुझे, मैं आत्मनिर्भर हूँ पूरा।
तुम्हारे अपने होते हैं, मेरे तो सब जग हैं पूरा।
गिरता हूँ तो हर कोई दौड़कर आता है,
कहीं रुक जाऊँ तो हाथ पकड़कर पार ले जाता है।

जब सड़क पार करना मुश्किल होता है, सब कुछ रुक जाता है।
मेरे कदम पड़ते ही, सब गाड़ियाँ थम जाती हैं,
और मेरे रब की कई दुआएँ ले जाती हैं।

जब आँखें बंद हो जाती हैं, तो रात हो जाती है।
जब आँखें खुल जाती हैं, तो दिन हो जाता है।
ना कोई गिला है डॉक्टर से, ना कोई शिकवा है इस रब से।
ना कहो मुझे नेत्रहीन, मैं सब कुछ देखता हूँ पूरा।

तुम जाते हो बाहर, खोजते हो ध्यान,
पर मैं तो हर पल करता यही मानसिक क्रिया।
बंद हैं आँखें मेरी, अँधेरा ही संसार,
पर भीतर की ज्योति करती उजियारा।

नहीं है कोई शिकायत हे प्रभु, तुझसे मेरी यही है विनती।
दिया तूने बहुत, नहीं कोई अब चाह।
देना है तो उसे दे, जो मुझसे अधिक अक्षम है,
क्योंकि मेरा विश्वास हर पल तुझमें है।

क्यों मैं हूँ नेत्रहीन — सोचा मन में कई बार,
पर फिर भी न हारी, सपनों की है उड़ान।
बनना है वकील, जज, डॉक्टर या कमिश्नर,
और एक दिन मैं ये करके दिखाऊँगा।

तुम्हारे पास किताबें हैं, ज्ञान का सागर,
मेरे पास तो बस छेद भरी एक ब्रेल किताब।
पर इसी एक किताब से मैं जग जीत जाऊँगा,
ज्ञान की शक्ति से हर बाधा मिटाऊँगा।

एक छोटी सी है फ़रियाद ऐ खुदा,
एक बार तो मुझे खोई हुई रोशनी दिला दे।
ताकि मैं भी देख सकूँ इस हरे-भरे संसार को,
अभी तो अँधेरे में ही संतोष और प्रसन्नता पा लेता हूँ।

सुनोगे ना मेरे ईश्वर, सुनोगे ना मेरे ईश्वर...
यह मेरी प्रार्थना, मेरी पुकार।
मेरी बंद पलकें, मेरा ध्यान,
ना कहो मुझे नेत्रहीन — मैं सब कुछ देखता हूँ पूरा।

(6)
जल, जीवन का सार

जल तू जीवन का आधार,
तेरे बिना सब संसार बेकार।
तू ही हरियाली का संदेश,
तू ही धरती का सुंदर वेश।

जल, तू जीवन की धारा,
तेरे बिना सब बंजर, तेरे बिना ना जग प्यारा।
तू ही खेतों में हरियाली लाए,
तू ही नदियों से सागर तक जाए।

तेरे कारण फसलों में गीत,
तेरे संग ही मानव प्रीत।
बूँद-बूँद में तेरी ममता,
सागर में तेरी अनंत सत्ता।

तू बरसे तो जीवन हँसे,
तू रूठे तो सब सूना लगे।
तेरे बिना न वृक्ष पले,
तेरे बिना न नदियाँ चले।

तू ही माँ के आँचल में ठंडक सी,
तू ही बच्चे के हँसते चेहरे की चमक सी।
तेरे बिन साँसें भी सूख जाएँ,
धरती की गोद में दरारें पड़ जाएँ।

तू अमृत भी, तू प्रलय भी,
मानव की करनी का फल भी।
जिसने तुझे बाँधा, बेचा, सुखाया,
उसने अपना ही घर जलाया।

सुन रे मानव! सुधर अभी,
जल ही जीवन, यही सच्ची नबी।
संभाल हर बूँद, ये ईश्वर की दान,
वरना प्यास बन जाएगी पहचान।

जब तक जल बहेगा, जग रहेगा,
जब जल घटेगा, मनुज मरेगा।
जल बचे तो कल बचेगा,
यही धरती का धर्म कहेगा।

संभाल इसे, न लूट इसे,
हर बूँद में जीवन की लकीर है।
जल बचेगा तो कल बचेगा,
यही धरती की तक़दीर है।

(7)
पेड़ लगाओ हरयाली वापस लाओ ,

पेड़ लगाओ हरयाली वापस लाओ ,
जंगल हँसे, आसमान मुस्कुराये,
आओ धरती माँ को स्वच्छ बनाएं,
आओ हम कसम खाएं, पर्यावरण को बर्बाद होने से जरा बचाएं,
समय ज्यादा बचा नहीं, पेड़ लगाओ दुनिया बचाओ,
येही हो हम सब का नारा, प्यारा प्यारा।

कभी सोचा इन मे भी है प्राण, वास हमारे देवताओं का,
इनकी छाया मे ही, आचार्यों ने पाठ पढ़ाया ज्ञान का,
नहीं मानोगे तो, सूरज देवता भी नाराज खड़े,
जल जाएगी ये धरती, मेरी आग उगलती किरणों से,
आओ पेड़ लगाओ, हरयाली वापस लाओ,

हरी भरी ये वादियाँ, सुन्दर नज़ारे, और स्वच्छ जल की ये थी भूमि,
नहीं बचेगी फूलों की भीनी खुशबू, ना बचेगा उनका मुसकुराता रंग,
माटी को गहरा जख्म दिया तूने, लिया जहां से अपना जन्म,
दूषित करके मानव तूने, पवित्र धरती पर किया कैसा कर्म,
पर्यावरण से ही है हम सबकी जान, दो इसे पूरा सम्मान,

पिघल रहा ऊंचा हिमालय, रो रहा नीला आसमान,
डूब रही धरती बाढ़ से, रो रहा किसान,
ना बच रहा कोई, प्रकृति कर रही वो नुकसान ,
मानो जैसे कह रही हो हम से,
बचा लो ये सोने की धरती, ना अब और मूर्ख बनो हे इंसान,
आओ पेड़ लगाओ, हरयाली वापस लाओ,

हे मानव सोचा तूने कभी, अपनी जरूरत के लिया बना ख़ुदग़र्ज़,
अपने लालच मे, कर हवा को दूषित, भुला तू अपना फर्ज,
वातावरण मे घोला जहर, कैसे चुकाओगे आने वाली पीढ़ी का कर्ज,
इस उजड़ती बगिया से, पशु, पक्षी भी हारा,
कहा बनाएं अपना आशियाना, अपने घोंसले, कहाँ से खाएं ये चारा,

भूमि, धरती, भू, धरा, तेरे हैं कितने नाम, पर तुझे किया हुमने बदनाम,
आओ मिलकर कसम खाएं, संदेश ये घर घर पहुचाएं,
बदले हम तस्वीर संसार की, घना पेड़ों का दृश्य बनाए,
आओ इसे फिर से सुन्दर बनाए, आओ मिलकर पर्यावरण को बचाएं।
आओ मिलकर पेड़ लगाएं, आओ मिलकर पर्यावरण को बचाएं।

भाग 2:
देशभक्ति और सैनिक जीवन की झलकियाँ

(8)
एक बार नहीं, सौ बार — हम हैं तैयार

एक बार नहीं, सौ बार हम हैं तैयार।
देश की खातिर मिटने को — हम हैं तैयार।
हमें देख के अंबर भी झुके — हम हैं तैयार;
एक बार नहीं, सौ बार — हम हैं तैयार, हम हैं तैयार।

सर नहीं झुकने देंगे; ऐ देश, हमें तेरी कसम।
फिर क्या दुनिया, क्या पाकिस्तान —
सभी को झुकाने आए हैं; ऐ देश, हमें तेरी कसम।
एक बार नहीं, सौ बार — हम हैं तैयार, हम हैं तैयार।

हिंदुस्तान तुझे करें हम सलाम — तेरे लिए मिटने आए हैं;
तेरा सर न झुकने देंगे, दुश्मन को झुकाने आए हैं।
पीछे हटना काम नहीं — सर तन से जुदा, दुश्मन का मारने आए हैं।
माँ-भारती, तुझे करें हम सलाम — तेरे लिए मिटने आए हैं, तेरे लिए मिटने आए हैं।

कारगिल और गलवान में — तूने हमें ललकारा है;
नादान सुहागनों का पूछ धरम — उनका सिंदूर उजाड़ा है।
भूल गया ईखहतर और कारगिल का युद्ध — कैसे तुझे पछाड़ा है;
देखा जब भी तूने आँख उठा कर — कैसे तुझे सुधारा है।

देवी-देवताओं का मेरा भारत — सब देशों में महान है।
इस देश की मिट्टी पर मार मिटने को हर तन कुर्बान है।
एक बार नहीं, सौ बार — हम हैं तैयार।
देश की खातिर मिटने को — हम हैं तैयार।

(९)
मैं हूँ हिन्दुस्तानी वीर सिपाही

मैं हूँ हिन्दुस्तानी वीर सिपाही,
सीना ताने, खड़ा हूँ अपनी पोस्ट पर।
शान, मान और आन से लहराता ध्वज तिरंगा।
जय हो भारत, जय माँ भारती...
जय हो भारत, जय माँ भारती...

बाईस हज़ार फुट की ऊँचाई पर तैनात,
सफ़ेद बर्फ़ की चादर ओढ़े, यह धरती हमारी है।
हवा चुभती है शूल-सी, तूफ़ानों की रफ़्तार तेज़,
न पत्ता, न पेड़, न कोई पशु-पक्षी का साया है।

दिन लंबे, रातें छोटी,
हर पल कठिन, हर घड़ी अनोखी।
साँस लेना भी लगता भारी,
ठंड से अकड़ते हाथ और पाँव, फिर भी मैं प्रहरी।

साथी मेरा यहाँ बस एक छोटा-सा ट्रांजिस्टर,
सुनाता रहता है फौजी गीत, भरता मन में शक्ति।
दिन हो या रात, यही है सहारा।
स्वर लहरियों में मिलता सुकून, आता है हौसला।

गानों में गूँजती माँ-बाप की ममता,
बीवी-बच्चों की हँसी की मधुर स्मृतियाँ।
न चिट्ठी का समाचार, न संदेश की व्यस्था,
बस यादें ही संग, और गीतों की व्यथा।

कभी-कभी गुनगुनाता हूँ बेसुरा,
लता, किशोर, मुकेश, रफ़ी की मधुर धुनें।
याद दिलाती हैं घर-आँगन की खुशबू,
रुला जाती हैं आँसू संग बीती दास्तानें।

वायरलेस पर जब आता संदेश,
धड़कता दिल, आँखें भीग जातीं।
परिवार सुरक्षित है, देश है मज़बूत।
ये शब्द सिपाही के जीवन को संवार जाते।

"दस दिन बाद आ जाएगा दूसरा सिपाही,
तुम्हारी होगी बदली" — सुनकर खिल उठे अरमान।
गिनते-गिनते दिन कट जाते खुशी में,
दूर से आता नज़र बलविंदर, उमंगें हो जाती जवान।

गले से लगाता जैसे बरसों बाद मिला कोई अपना,
पिघल जाती ठंड, खिल उठता वीर का चेहरा।
शायद लाया हो घर का संदेश,
उस लम्हे में जीवन भर का सुख समा जाता।

ये ही है एक सिपाही की पोस्ट की कहानी,
जो हर कठिनाई को हँसकर आसान बना लेता।
चुनौती हो चाहे कैसी भी,
मुस्कुराहट संग हर दर्द को गले लगा लेता।

हम ऊँचा रखते वतन का सिर,
आँच न आने देंगे इस पावन धरती पर।
मिट्टी में मिला देंगे उठेगा जो दुश्मन का सर।

हर वर्दी की आवाज़ बस ये ही पुकारती,
"जय हो भारत, जय माँ भारती..."
जय हो भारत, जय माँ भारती...
जय हो भारत, जय माँ भारती...

(10)
वो घाटी फिर मुस्कुराएगी

वो घाटी फिर मुस्कुराएगी,
तिरंगा फिर लहराएगी।
कश्मीर हमारा था, है और रहेगा,
हर जाँ से आवाज़ ये आएगी।

बारूद ने चुरा लिए बचपन,
माँ के आँचल में अब डर है।
मस्जिद, मंदिर, स्कूल, किताबें,
सबमें अब बस सिहरन भर है।

काले नकाबों में जो बैठे,
वो इंसान नहीं, साए हैं।
मासूमों के लहू से खेलें,
वो दानव रूप में आए हैं।

पर हम ना रुकेंगे, ना झुकेंगे,
हर आतंकी मिट जाएगा।
जहाँ लहू गिरा वीरों का,
वहीं तिरंगा खिल जाएगा।

बच्चों के सपने लौटाएँगे,
आँखों के आँसू सुखाएँगे।
जहाँ गोलियाँ अब गूँजती हैं,
वहीं फिर से भजन बजाएँगे।

वो घाटी फिर मुस्कुराएगी,
तिरंगा फिर लहराएगी।
आतंक का हर साया मिटेगा,
हर घर में दीप जल जाएगा।

पर हम ठहरे उस मिट्टी के सपूत,
जिसने हारना सीखा ही नहीं।
हर इंच ज़मीन के साथ हमारा लहू,
कसम खा चुका — पीछे हटना नहीं।

जहाँ कभी बहती थी खुशबू हवा में,
अब गूँजें सिसकियाँ गलियों-दरवाज़ों में।

आजाद कश्मीर — नाम नहीं, एक जिद है,
वो हमारा दिल, हमारी धड़कन है।

सन सैंतालीस की टूटी रेखा,
अब मिटनी ही बाकी है।
वो जिद नहीं, ये प्रण हमारा,
हर दिल में यही आग बाकी है।

कश्मीर हमारा था, है और रहेगा,
हर लहू ये गाता रहेगा।
वो घाटी फिर मुस्कुराएगी,
भारत माँ फिर गुनगुनाएगी।

माँ फिर चैन की नींद सोएगी,
जब घाटी में आरती गूंजेगी।
वो दिन आएगा, वो पल आएगा —
वो घाटी फिर मुस्कुराएगी।

(11)
शहीदों को नमन

चलो सलाम करें उस धरा को,
जहाँ गूँजी थी जयकार,
आज़ादी के रणबाँकुरों ने
लिख डाली इतिहास की धार।

सुभाष बोस ने बोला — "तुम मुझे खून दो,
हम देंगे आज़ादी।"
उस आवाज़ से काँप उठा था
हर दुश्मन, हर बर्बादी।

चंद्रशेखर आज़ाद रहे, मरना कबूल किया,
पर बेड़ियाँ कभी न पहनीं।
जंगल-जंगल गूँजा नाम था,
उस वीर ने जंजीरें तोड़ीं,
मरते दम तक वतन को किया सलाम था।

भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु,
हँसकर सूली पर चढ़ गए,
देशभक्ति की ज्योति जलाकर
अमर गाथा लिख गए।

कौन हुआ इनके जैसा, कौन होगा इनके जैसा,
इनको अब सब भूल गए।
ना जाने इस आज़ादी की खातिर,
कितने तन कुर्बान गए, कितने तन कुर्बान गए।

आज भी कारगिल से गलवान तक,
हर मोर्चे पर बलिदान है।
कितने ही वीरों से आज भी
धरती लहूमान है।

पूछता ना कोई, माँ की गोद सूनी हो जाती है,
पर शान तिरंगे की हर वीर का मान बढ़ाती है।

आज भी कारगिल से गलवान तक,
हर मोर्चे पर बलिदान है।
कितने ही सीमा पर आज भी
धरती लहूमान है।

इन शहीदों की गाथाएँ
फिर भी गूँजतीं अब भी महान हैं।
इन हीरो से तो मेरा भारत हुआ महान है
मेर भारत महान है, मेरा भारत महान है।

शहीदों, तुमको नमन हमारा,
तेरे बिना सब सूना है प्यारा।
भारत माँ की आन तुम्हीं हो,
तेरे ही बल पर जग सारा
वंदन तुम्हें, अभिमान तुम्हीं हो।

(12)
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों, भिखारी पाकिस्तान की ये कहानी

सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों, भिखारी पाकिस्तान की ये कहानी।
झूठ बोलने में है अव्वल, भीख माँगने में है विशेष, ये कहानी।
ना छोड़ा कोई देश, ना छोड़ा खटखटाना किसी दरवाज़े का।
चाहे जितनी फटकार मिले भी, माँगना इनके लिए धर्म-सा।
कर्ज़ है इनका 63,000 ट्रिलियन रुपया,
जो आता है, 75 प्रतिशत GDP उनका।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों — भिखारी पाकिस्तान की ये कहानी।

मियां मुनिर और शरीफ बन गए ठेकेदार माँगने के,
जो बेज़्ती ये करा रहे हैं पाकिस्तान की, वह बड़ी अजीब।
IMF को सोचा और बनाया पाकिस्तान का बैंक,
जब भी दिखे, लोटा लिए जाते हैं माँगने भीख।
ना पिछला कर्ज़ चुकाया, खर्च किया उसे आतंकवाद पर।
अब बावला हुआ मियां शरीफ, बौखलाया मियां मुनिर।
चोरी में तो मिला इनको वज़ीफा।
जीता भारत, चुरा ली ट्रॉफी — मियां नकवी साहब।

जेब है खाली, बैंक भी है खाक,
बाँट रहा फिर भी हर खिलाडी को 25 लाख।
ढिंढोरा पीट रहा है यहाँ, पाकिस्तान जीता है एशिया कप।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों — भिखारी पाकिस्तान की ये कहानी।

अब आई गोली, चलाई गई अपने ही लोगों पे,
मारे मारे फिरते आज़ाद कश्मीरी — दो रोटी और दाल पे।
मुनिर ने भेजी फ़ौज़ एक हजार की, गोली बरसाने को।

क्या पागल हो गए ये दोनों, कसाइयों जैसा क़रार किया।
ना छोड़ा औरतें, बच्चे, न मरीज, न बुज़ुर्ग।
टूट जाएगा पाकिस्तान बहुत जल्द।
नाम-ओ-निशाँ मिट जाएगा इसके नक्शे से।
काम ऐसा किया कि खुदा का नाम भी ख़राब कर दिया।

मदरसे में तालिम देते आतंकवाद की, और थमाते हाथों में बंदूक।
ना छोड़ा लड़कियों को — उन्हें भी किया मजबूर।
वाह रे मुनिर, वाह रे मियां शरीफ — बहुत खूब, बहुत खूब।
डर गए ये दोनों इतने कि पाकिस्तान का किया विनाश।
भाग रहे हैं दोनों, अब विदेश विदेश।
महाशय ट्रम्प ने भी रखा हाथ दोनों पर,
पर समझ न पाए उनकी चाल।

सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों — भिखारी पाकिस्तान की ये कहानी।

(13)
देखो कैसा है पड़ोसी मुल्क

देखो कैसा है पड़ोसी मुल्क, नहीं छोड़ी अब भी अपनी औकात,
हमला किया फिर गरीब अफ़गान पर, नहीं आई उससे ज़रा भी लाज।

हा-हा कार मचा है दुनिया में, है बस यही शोर,
क्या पागल हो गए वहाँ के हुक्मरान, ना बाज़ आएंगे ये चोर।

चालाकी इनकी देखो ज़रा, मिसाइलें तब मारी जब मंत्री था विदेश,
ना बाज़ आ रहा अपनी हरकत से, मार रहा वहाँ निर्दोष।

किया अफ़गान ने दिल्ली से ऐलान, बोला उस बेग़ैरत मुल्क को,
"ना बचेगा, ना रहेगा तेरा निशान,अब तक चुप थे, ना सहेंगे अब ये दो।"

कहा , कई बार करी पार तूने सरहद, जो थोपी अंग्रेज़ों ने हम पर,
अब पार करेंगे हम भी इसे, सिखाएँगे तुझे सबक अमर।"

अगले दिन ही पठानों ने, झुकवाए घुटने उन पागल हुक्मरानों के,
दौड़े यहाँ-वहाँ वो सब, बोले अपने अंग्रेज़ आकाओं से,
बंध करवाओ युद्ध इन तालिबानों से।

पर जाए भी तो भाग कर कहाँ,कर रहा है नापाक हरकत ,
ना देखता औरत, ना बच्चे,ना देखता कोई भी सूरत।

भारत ने भी करी कड़ी निंदा, बोला निरलज्ज, तू अंधा,
जानता नहीं अफ़गान का रिश्ता, भारत खड़ा मिलाकर कंधे से कंधा ।

लड़ेंगे मिलकर आतंक से, खड़े हैं तेरे साथ अफ़गान,
अब भी ना बाज आया ये, रचेंगे नया इतिहास महान।

हम खड़े हैं साथ तुम्हारे, न केवल शब्दों के सहारे,
विकास हो, व्यापार बढ़े, बनें सेतु हज़ार किनारे।

आतंकवाद मिटे जहाँ — वहां खुलेगा नया सवेरा,
भारत-अफ़गान मिलकर करेंगे रोशन हर कैरवां का बसेरा।

सैनिकों की वीर गाथाएँ, और व्यापार की नई राह,
बाज़ार से बाज़ार तक बहे दोस्ती का यही वाह।

सफर में साथ चलें हम, अनाज हो या मशरूफ़ माल,
हाथों में हाथ लेकर, करेंगे हम हर मुश्किल कमाल।

ना देखेंगे अब कोई ज़ोरज़ुल्म, ना सहेंगे अब बेइज़्ज़ती,
क्योंकि हम खड़े है कंधे से, नहीं रोकेंगे अब कोई लड़ाई।

आओ मिलकर करें सबक, अमन के गीत गाएँ,
आतंक के साँचे तोड़कर, नई रोशनी लाएँ।

हों चाहे कितनी भी चुनौतियाँ, चाहे दूरी कितनी भी भारी,
भारत-अफ़गान का रिश्ता रहे अटल, मित्रता रहे उज्ज्वल सारी।

जब हम साथ खड़े होंगे, टूटेगा दुष्ट का घमंड,
आतंक की आग बुझेगी, फूलेगा फिर हर वीरभूमि का धरण।

भाग 3:
अध्यात्म और जीवन दर्शन

(14)
सुन प्रभु मेरी कहानी

सुन प्रभु मेरी कहानी
मेरा दर्द, मेरी जुबानी।
तेरा इंसान रो रहा भारी,
दे दे जीवन में खुशहाली।

गुमसुम, खामोश है सारा जहाँ,
दुख की छाया, क्यों इतना धुआँ।
क्यों बनाया संसार उदासी से,
क्यों सजाया जीवन निराशा से।
अभी देर नहीं, सुन भगवान,
तेरे बिना ना जग जहान।
सुन प्रभु मेरी कहानी,
मेरा दर्द, मेरी जुबानी।

हे दाता, चरणों में प्रणाम,
दे दे सबको शुभ वरदान।
खाली दुआएँ जाती नहीं,
तेरी दया से राह कटे यहीं।
हम सब हैं नादान तेरे,
भरोसा रखे बस तुझ पे रे।
सुन प्रभु मेरी कहानी,
मेरा दर्द, मेरी जुबानी।

मदद की आस तुझसे प्रभु,
दुनिया से कोई सहारा न जुड़ूँ।
तेरे दुख ने दिखाया राह,
कौन है अपना, कौन है पराया।

सुख तेरा है, दुख भी तेरा,
कर दे जीवन में मधुर सवेरा।
सुन प्रभु मेरी कहानी,
मेरा दर्द, मेरी जुबानी।

गिरती दीवारों को सहारा दे,
डूबती नाव को किनारा दे।
चाँद पूरा जीवन में ला दे,
तेरी कृपा से अंधेरा मिटा दे।
हे भगवान, सबका कल्याण,

तेरी दया से हो निदान।
सुन प्रभु मेरी कहानी,
मेरा दर्द, मेरी जुबानी।

(15)
तेरे ही संकल्प से हमने जनम पाया,

तेरे ही संकल्प से हमने जनम पाया,
तेरी ही इच्छा से जीवन ये आया।
रूप तो बदलते हैं, पर तू ही एक है,
हर श्वास में बस तेरा ही नेक है।
हे प्रभु, तू ही आरंभ मेरा,
तेरे बिना कुछ भी न सवेरा।

तेरी ही लीला से माँ ने गोद सजाई,
उसकी ममता में दुनिया बसाई।
माँ की गोद में जब पहली साँस ली,
लगा जैसे खुद प्रभु ने बाहें फैलाई।
माँ की ममता में तू ही समाया,
उससे ही धरती पर जन्म पाया।

पिता ने दिया जीवन को आधार,
उसके कंधों पे दिखा संसार।
उसके पसीने में त्याग की कथा,
उसकी सीख में जीवन की व्यथा।
पिता का आशीष जो साथ रहा,
हर आँधी में भी विश्वास रहा।

गुरु ने आँखों में दीप जलाया,
अज्ञान के अंधेरों को मिटाया।
उसने बताया क्या है सच्चा धर्म,
उससे ही समझा जीवन का कर्म।
गुरु बिन जीवन अधूरी राह,
वो ही जोड़ता प्रभु से चाह।

जिस रोटी में हमने नमक चख लिया,
उस फ़र्ज़ के आगे सर झुक गया।
काम वही पूजा, यही मेरा धर्म,
जिससे चलती है जीवन की लय और कर्म।
जिसका अन्न खाया, वफ़ादारी निभाऊँ,
उस कर्मभूमि को मंदिर बनाऊँ।

जो शासन करे धर्म के साथ,
जनता का रखे सदा विश्वास।
राजा वही जो न्याय निभाए,
सबको समान दृष्टि अपनाए।
सच्चा राजा वही कहलाए,
जो प्रजा के आँसू मिटाए।

प्रभु से जन्म, माँ से जीवन,
पिता से शक्ति, गुरु से साधन।
काम से सम्मान, अन्न से प्राण,
राजा से रक्षा, समाज से मान।

हर रूप में तू, हर साँस में तू —
सबमें है तू, मेरे प्रभु... तू ही आरंभ, तू ही अंत रूप।

(16)
"मेरे बच्चों, ईश्वर तुम पर कृपा करें"

मेरे बच्चों… ओ मेरे बच्चों…
ईश्वर तुम पर कृपा करें…
हर राह में उजियारा भरें…

जब भी जीवन की राह कठिन हो,
विश्वास तुम्हारा सच्चा सजन हो।
मत डरना अंधियारे में,
प्रभु हैं संग तुम्हारे में॥

मेरे बच्चों, ईश्वर तुम पर कृपा करें,
हर दिल में प्रेम का दीप धरें।
बेटा-बेटी, दोनों मेरे,
सत्य की राह पे पग धरें॥

जब थक जाओ जग की दौड़ में,
शरण लो प्रभु की गोद में।
आँसू भी तब गीत बने,
हर पीड़ा भी प्रीत बने॥

मेरे बच्चों, ईश्वर तुम पर कृपा करें,
हर दिल में प्रेम का दीप धरें।
बेटा-बेटी, दोनों मेरे,
सत्य की राह पे पग धरें॥

ना ऊँच-नीच, ना भेद कोई,
हर जन में बस ईश्वर सोई।
जो दे उसी में सुख पाओ,
सबमें खुदा का रूप दिखाओ॥

मेरे बच्चों, ईश्वर तुम पर कृपा करें,
हर दिल में प्रेम का दीप धरें।
कर्म तुम्हारे पवित्र रहें,
हर दिन तुम्हारे शुभ सवेरे॥

माँ की ममता, पिता का मान,
दोनों का तुम रखो सम्मान।
घर बने मंदिर, मन बने पुजारी,
जीवन गूंजे प्रेम की बंसी प्यारी॥

मेरे बच्चों, ईश्वर तुम पर कृपा करें,
हर साँस में प्रभु का नाम भरे।
तुमसे जग में उजियारा फैले,
तुमसे स्नेह का सुर झरे॥

मेरे बच्चों... ओ मेरे बच्चों...
सदा आशीर्वादित रहो...
ईश्वर तुम पर कृपा करें...

(17)
तेरी राहों में चलता हूँ, तेरा सहारा साथ है,

हर मुश्किल को आसान करता, तू मेरा कैडी ही मेरा विश्वास है।
ओ मेरे साथी, ओ मेरे दोस्त,
तेरी मेहनत को सलाम है, तेरा हर जज़्बा ख़ास है।

दुआ है मेरी, कैडी तू सदा मुस्कुराए,
तेरी दुनिया में रोशनी ही छाए।
हर कदम तेरा आसान हो जाए,
मेरे कैडी, तू सदा खुशियाँ पाए।

गोल्फ कोर्स में जब धूप चढ़े, या बरसें बादल घने,
तेरे चेहरे की सच्ची हँसी, दिल को सुकून दे।
लाइन दिखाने वाला तू, उम्मीद जगाने वाला तू,
तेरे बिना अधूरी मेरी गेम की हर कहानी।

जिस दिन मेरे मन का नहीं मिला, कैडी — भारी उदास हुआ मन।
कैडी मेरी शान है, कैडी मेरा जीवन है,
वो मेरी है हँसी और साँस, जिसके बिना है ज़िंदगी आधी।

परशुराम कोच का साथ मिला, सिखाया खेल का सही रास्ता,
वासू, रवि और सलीम ने दिया हौसला हर पल सच्चा।
जफ़्फ़र, अजय और संजय ने दिखाया मंज़िल का उजियारा,
आनंद, लक्ष्मण और राजू बने मेरे खेल का सहारा।
वेलु और रमेश ने सिखाया, गलती को कैसे सुधारना,
सही और गलत का फ़र्क दिखाकर, हर दिन मेरी गेम सँवारना।
तेरी राहनुमाई से ही बेहतर बन पाया हूँ मैं,
तुम सबकी दुआओं से ही आगे चैंपियनशिप लड़ पाया हूँ मैं।

कैडी की आशाओं को ना समझो कम,
तालीम देंगे बच्चों को सबसे अच्छी।

रवि कैडी बोला घमंड से — "लड़कियाँ हैं तीन,
पर हैं तीनों इंजीनियर। एक लगी है ऊँचे पोस्ट बैंक में,
दूसरी लगी है आईबीएम में,
फाइनल साल इंजीनियरिंग में है तीसरी।
सर, सुनिए, मेरे दामाद भी हैं सारे इंजीनियर,
और मदद करी ख़ुदा ने — स्कॉलरशिप पर पढ़ी सब,
ना लागत लगी कोई मेरी।"

अब बरसी कैडी ने सुनाई अपनी दास्तान —
"मैं तो बिलकुल ही अनपढ़,
एक लड़की बनी डॉक्टर और दूसरी बनी इंजीनियर।

किया दोनों ने रोशन नाम मेरे गाँव का,
बोलते हैं — 'आप बाबा बैठो, अब हम खिलाते हैं',
और मेरे लिए आते हैं चार आँसू।"

दुआ है मेरी, तुम सब मुस्कुराओ,
हर मैदान में जीत ही पाओ।
मेहनत का हर सपना सच हो जाए,
मेरे कैडी साथियों, तुम सदा खुशियाँ पाओ।

दुआ करूँ ख़ुदा से — जाना ही पड़े मुझे संसार से,
तो अलविदा करो कोर्स से,
और सैल्यूट करते बोलते जाएँ मेरे ये सब कैडी —
"साहिब मेरा अच्छा एक गोल्फर था।"

दिल से निकली मेरी दुआ —
हर पल कैडी तेरा हो उजाला,
तेरे जैसा ना कोई और,
तू ही है मेरा प्यारा साया।

दुआ है मेरी, तुम सब मुस्कुराओ,
तुम सब हो मेरे गोल्फ सफ़र के गीत,
तुम बिन अधूरी है मेरी जीत, तुम बिन अधूरी है मेरी जी

(18)
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार

नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।
लक्ष्मी तुम, सरस्वती तुम, हो तुम दुर्गा का अवतार।
राष्ट्र की जननी हो तुम, हो तुम सृष्टि का आधार।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

जैसे प्यारा ईश्वर ऊपर, नीचे नारी तू महान है।
नारी, तेरा चरित्र ही तो, तेरा स्वाभिमान है।
दिया जगत ने तभी तो, तुझ को ये सम्मान है।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

नारी शक्ति, माँ बनकर तूने हम बच्चों को पाला है।
जब भी आन पड़ा संकट, तूने हमें संभाला है।
कभी दुर्गा, कभी काली, कभी झांसी की रानी कहलाती हो।
बन ममता की मूरत, हर घर में तुम समाती हो।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

नारी शक्ति, तूने बन काली, राक्षसों को संघारा है।
झांसी की रानी बन, दुश्मन को मारा है।
तूने ही तो बनकर राधा, बनकर मीरा प्रेम हमें सिखाया है।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

होसलों की उड़ान भरती है नारी, हर मुश्किल से लड़ती है नारी।
हर पिता की शान है नारी, हर भाई का मान है नारी।
एक पुरुष का सम्मान है नारी, एक बच्चों को वरदान है नारी।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

देवता भी करते जिसकी पूजा हैं, नारी ही तो सीता का रूप दूजा है।
नारी एक रत्नों की खान, नारी हर घर-आँगन की मुस्कान।
नारी बिना जीवन अधूरा है, नारी ही तो त्याग का नाम दूजा है।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

कोमल है, कमजोर नहीं, ये साबित कर दिखाया है।
पाकिस्तानी हैवानों को, नारी तूने सबक सिखाया है।
चाँद पर भी तो जाकर, नारी तूने तिरंगा पहराया है।
नारी जगत में तूने इतिहास बनाया है, तूने इतिहास बनाया है।
नारी शक्ति, शक्ति है नारी, नारी है जीवन का सार।

भाग 5:
बचपन, गाँव और संस्कृति की खुशबू

(19)
वो गाँव की मिट्टी की खुशबू

वो गाँव की मिट्टी की खुशबू, अब भी मन को भाती है,
बापू खेतों में जाते थे, माँ गौशाला में गाती है।
वो चूल्हे की रोटी, वो सरसों का साग,
हँसी में घुला था, वो हर एक स्वाद।

मिट्टी की खुशबू, अब भी दिल को बुलाती है,
गाँव की राहें, मन में इक दीप जलाती है।
कभी लौट चलें उस ओर, जहाँ अपनापन बसता है,
जहाँ माँ की ममता में, सारा सुख सिमटता है।

वो गिल्ली-डंडा, वो कबड्डी की शाम,
धूल भरे मैदानों में, हँसी के थे जाम।
मास्टर की डाँट, वो मुरगा बनना,
फिर भी मज़ा था, वो बचपन अपना।

कहाँ गई वो बातें सारी, वो बचपन की यादें प्यारी,
शहर की चकाचौंध में, दिल की रौशनी हारी।
मिट्टी की खुशबू, अब बस ख़्वाबों में आती है,
वो गाँव की गलियाँ, अब बस यादों में जाती है।

ताई-चाची की डाँट भी अब, मीठी सी लगती है,
उनके हाथों का खाना, अब बस यादों में बसती है।
शाम को सबका मिल बैठना, अब तो सपना हो गया,
हर कोई मोबाइल में खोया, रिश्ता "ऑनलाइन" हो गया।
ला... ला... ला... वो प्यारे दिन कहाँ खो गए,
हँसी के मोती धूल में सो गए...

अब बच्चों को ना वो खेतों की हरियाली भाती है,
अब घर की रोटी छोड़, बस पिज़्ज़ा की बातें आती हैं।
ना "ताई" जानते, ना "चाची", अब सब "आंटी" कहलाती हैं,
अपनों के मेले में भी, सब अपनी दुनिया बनाते हैं।

कभी बैठ के सोचता हूँ, क्या पाया, क्या खोया,
माँ की ममता, बापू का साया — अब कौन अपना, कौन पराया।
कमाने चले थे सपने, पर सुकून वहीं छोड़ आए,
इस शहर की रौशनी में, अपने ही घर को भूल आए।

मिट्टी की खुशबू, अब भी दिल को बुलाती है,
गाँव की राहें, मन में इक दीप जलाती है।
चलो लौट चलें उस ओर, जहाँ मुस्कान सजी रहती है,
जहाँ माँ की गोद में, दुनिया अपनी लगती है।

"मिट्टी की खुशबू..."
"अब भी दिल को बुलाती है...

(20)
मिट्टी का रिश्ता

मेरे पैरों में लिपटी तू, ऐ मेरी ज़मीन माँ,
तेरे आँचल की खुशबू में, जीता हूँ अरमान।
धूप जले तो छाँव बनूँ, बारिश में गीत बनूँ,
तेरे बिन इस जीवन का, क्या कोई मीत बनूँ।

हर आँधी, हर मौसम में, साथ तेरा पाया,
मिट्टी का रिश्ता, गहराई से दिल में समाया।
तू कहती — "बेटा, मैं तुझमें", मैं कहता — "माँ, तू मुझमें",
हम दोनों से ही साँस चले, इस धरती-गगन में।

जब फसल सूखी, आसमां भी रूठ गया,
बच्चों की हँसी जैसे, घर से छूट गया।
रसोई में चूल्हा ठंडा, पर उम्मीद जलती रही,
थोड़ी-सी रोशनी में भी, हिम्मत पलती रही।

दुनिया वालो, जो खाते हो रोटी रोज़ की,
उसमें मेरी मेहनत है, कीमत हर बूँद की।
मत कहना किसान कमजोर, वो धरती का देव है,
भूख में भी बीज बोता, ये जीवन-सेव है।

हर हार के बाद, मैं फिर खड़ा हुआ,
मिट्टी ने कहा — "चल बेटा, बड़ा हुआ।"
धरती मेरी माँ, मैं उसका मान,
माँ का बेटा, हार न मान।

तू कहती — ''बेटा, मैं तुझमें'', मैं कहता — ''माँ, तू मुझमें'',
सपनों की हर साँस बहे, इस प्रेम-बंधन में।
मैं तुझे सँभालूँ, तू मुझे ज़िंदा रखे,
किसान और ज़मीन — एक कहानी सच्चे।

''मिट्टी का रिश्ता... कभी ना टूटे...

भाग 6:
जीवन की खुशियाँ और उत्सव

(21)
आओ आओ मुण्डयों–कुड़ियों आओ

मिलके सभी खुशी के सुर छेड़ो, गाओ।
हँसी के तराने गूँजें चारों ओर,
थकन हटे दिनभर की, मन पाए चोर।

आओ शीतल करें व्याकुल मन,
दूर करें अपना–पराया हर ग़म।
नाच उठे तन, गुनगुनाए प्राण,
सुबह तलक गूँजे उल्लास का गान।

दिल की पीड़ा हँसी में ढल जाए,
भरी हुई आवाज़ भी शांत हो जाए।
बोलो, पुकारो, संग मुस्कान बाँटो,
आज का अवसर यूँ ही मत गँवाओ।

कभी–कभी ही आता ये पल खास,
हँसी–ठिठोली का, मिलन का उल्लास।
बैठो संग–संग, बाँटें खुशियाँ सारी,
छोटी हँसी में छुपी हो सुख की क्यारी।

देखो बच्चों की चंचल मुस्कान,
हम भी बन जाएँ कुछ पल उनके समान।
शामिल हो इस हँसी में, दो चार नहीं हजारों में,
इसका कोई मोल नहीं, बिके न कभी बाजारों में।

उदासी–दुख सब हो जाए दूर,
दिल की चोटें हों चकनाचूर।
हँसी है हर दर्द का मरहम,
जिद हमारी — ना हो खुशी कम।

हँसी खिले चेहरों पर चुटकुलों सी,
खुशियों की बूंदें चमकें आँखों में।

मत कहो देर हुई घर जाने में,

रात अभी बाकी है चाँद ढल जाने में।
हँसी ही है सबसे बड़ा कमाल,
आओ साथियों, मिलकर करें धमाल।

बच्चे भी याद करें हमें कल,
कहें — "माँ–बाप ने दिए थे खुशियों के पल।"
जीवनभर उन्होंने काम ही किया,
आराम का नाम न कभी लिया।

अब हम बाँटें मुस्कान सभी संग,
यही हो जीवन की सच्ची उमंग।

ना माँगूँ खुदा से और कुछ यहाँ,

बस छाए हँसी का उजाला जहाँ।
विश्व में फैले शांति का नूर,
खुशियों के बादल छाएँ भरपूर।

हर चेहरे पर मुस्कान बनी रहे,
हर दिल में उमंगें सजी रहें।
यही दुआ है जीवनभर की,
गूँजे हँसी हर कोने–कोने की।

(22)
आओ मेरे अपने, गोवा की ओर

आओ मेरे अपने, गोवा की ओर,
खुशियों के संग बहे प्यार का घोर।
बागा-अंजुना पे मनाएँ त्योहार,
सालगिरह-जन्मदिन बने उपहार।
गोवा की रेत पे चलती हवा,
सागर की लहरों में छुपा नशा,
नीले गगन तले सुनहरी धूप,
दिल में जगाता है सपनों का रूप।

बीच पे नाचें लहरें संग,
मन करे गाए खुशी के रंग।
हर कदम पे मिलती आज़ादी,
गोवा की माटी है प्यारी-प्यारी।

कांडोलिम की रेत पे लिखें नाम,
मिरामार की हवाओं में गूँजे प्रेम का गान।
पणजी की गलियों में हँसी बिखराएँ,
दाबोलिम से मिलते मुसाफिर हरपल।
वास्को की रौनक संग सपने सजाएँ।

फिश करी-राइस से महके दावत,
पोर्क विंदालू में हो स्वाद की बरसात।
फेनी का जाम उठे मुस्कान के साथ,
बेबिंका-दोदोल दें मिठास की सौगात।

अगुआड़ा किला सुनाए दास्तान,
बेसिलिका की घंटियाँ गाएँ भगवान।
सालगिरह की यादें बनें चाँदनी,
जन्मदिन की खुशियाँ झलके जवानी।
क्रिसमस की घंटियाँ बजें चर्चों में,
तारों की रोशनी छिटके घरों में।
नए साल का जश्न हो सागर किनारे।

आओ मेरे अपने, संग-संग मनाएँ,
गोवा है सपना, गोवा है प्यार।
संगीत बने इसका उपहार,
जो भी आए, मुस्कुराकर लौटे।
गोवा का जादू हर दिल को जोड़े।

तो आओ प्रियजन, इस बार गोवा चलें,
यादों की किताब में नए पन्ने मिलें।
खुशियों का पर्व यहाँ हम मनाएँ,
गोवा की गोदी में मिलकर मुस्काएँ।

(23)
आया भाई आया, लो भाई आया

आया भाई आया, लो भाई आया,
अख़बार वाला लड़का आया,
दुनिया भर की और देश की खबरें लाया।

सुबह–सुबह हो चाय का प्याला, और साथ हो अख़बार,
पन्ने बदलूँ जल्दी–जल्दी, क्या–क्या खबरें हैं आज की।
पाया सब खबरें हैं भरपूर, कहीं पॉलिटिशियन की,
कहीं कोलकाता, कहीं मुंबई की तो, कहीं चाँद पे पहुँचने की।

आया भाई आया, लो भाई आया,
अख़बार वाला लड़का आया।

सुबह–सुबह राह देखूँ, अपने पहले मेहमान की,
आज टाइम पे आया, आज फिर देर कर दी।
ये ही शब्द निकलते हैं मुख से।

जवाब उस छोटे लड़के का — "साहब, साइकिल की चेन निकल गई,
लगाने में समय लगा, पर दौड़ा–दौड़ा आया।"
सर्दी हो, गर्मी हो या हो बारिश–आँधी, आना पड़ता है।
अपने आप भीगूँ, पर भीगने ना दूँ मेरे अख़बार।

आया भाई आया, लो भाई आया,
अख़बार वाला लड़का आया, अख़बार वाला लड़का आया।

अख़बार बाँटना ही मेरा काम नहीं, फिर जाता हूँ कॉलेज,
एक विद्यार्थी बनके, शाम को ट्यूशन जाता हूँ पढ़ाने बच्चों को।

मज़ा आ जाता है जब रात को परोसती है खाना माँ —
"गरमा–गरम खा ले बेटे, पर पहले नहा ले ना।"

आया भाई आया, लो भाई आया,
अख़बार वाला लड़का आया।

हाँ, पढ़ता हूँ मैं भी पूरा अख़बार,
ज्ञान लेता हूँ पूरा–पूरा खबरों का।
एक दिन सोचा — "बनके दिखलाऊँगा, एक दिन ज़िला अधिकारी।"
अब आई घड़ी इम्तिहान की, पापा बोले — "जा बेटे,
ठीक–ठीक उत्तर दे के आना।"
बैठा परीक्षा में, उत्तर सब आते थे।

अब आई घड़ी नतीजे की, पाया अपने को उत्तीर्ण।
साथियों से फूला न समाया, आए सब पड़ोस के लोग।
माँ ने भी कमी ना छोड़ी, दिया सबको हलवा–प्रसाद।
गले लगा–लगा कर बोले — "बेटे, इस बस्ती को भूलना ना कभी।"

आया भाई आया, लो भाई आया,
अख़बार वाला लड़का आया।

अब साथ ले गया अगले दिन, पड़ोस के लड़के को।
पूछा सबने बारी–बारी — "कौन है ये?"
बोला दबी आवाज़ में — "कल से अख़बार देगा ये।"
आँखों में ज़रूर थे आँसू, बोला — "साहब, मैं आई.ए.एस. उत्तीर्ण हुआ।"

बोले सब — "देखो, एक गरीब फटे कपड़ों वाले ने
हासिल किया क्या मुकाम!"

आया भाई आया, लो भाई आया,
अख़बार वाला लड़का आया।

भाग 7:
जीवन की सच्चाई

(24)
तेरे जाने के बाद

तेरे जाने के बाद, जीवन का फेर हुआ।
तेरा आशिक हुआ बर्बाद, ऐसा हर एक कहर हुआ।

ढूंढा तुझको गली-गली, न छोड़ा कोई मोड़।
मिला वरदान कुछ ऐसा, ना थमे आँसू की होड़।

ना आई कभी हँसी, दिल की धड़कन बढ़ गई।
सब भुला गए बारी-बारी, हर खुशी अब गुम हुई।

तेरे जाने के बाद, जीवन का फेर हुआ।
तेरा आशिक हुआ बर्बाद, ऐसा हर एक कहर हुआ।

वीरान हुआ फूलों का, खिलता वो बाग।
माली नहीं, परिवार नहीं, बुझ गया प्रेम का वो राग।

मुस्कुराहट भी भाग गई, अब कोई राह बाकी नहीं।
ज़िंदगी में है सन्नाटा, अब कोई चाह बाकी नहीं।

क्या करूँ, कुछ समझ न आए,
कैसे कटें ये लंबी रातें, कोई तो बताए।

सब तो गए, बस तू क्यूँ मुझको छोड़ गई,
क्यों रूठा है खुदा, क्यों ग़मों का पहाड़ तोड़ गई।

ना किए थे दान-धर्म कम,
क्यूँ ये उदासी छोड़ गई, क्यूँ ये उदासी छोड़ गई।

हाल मेरा है बेहाल, कोई पूछे तो सही।
महखाने में जाता तो, दर्द थोड़ा कम होता कहीं।

मुझे अकेला देखकर, नींद भी तो आँखों से भाग गई।
तेरे बिन सूनी हुई ये दुनिया, ज़िंदगी जैसे खुशियाँ लेकर भाग गई।

तेरे जाने के बाद, जीवन का फेर हुआ।
तेरा आशिक हुआ बर्बाद, ऐसा हर एक कहर हुआ।

(25)
ज़िंदगी का सफ़र

एक समय जब मैं हँसा,
मिट्टी में खेला, धूप में नाचा,
माँ की गोद में सुख पाया,
पिता की उँगली थाम के सारा जग देखा।

भाई की हँसी, बहन की बातें,
हर दिन जैसे त्योहार लगे,
कंधे पर बस्ता, आँखों में सपने,
हर कल अपना, संसार लगे।

फिर आया वक़्त पहचान का,
मेहनत, कर्म, सम्मान का,
देश की मिट्टी, अपना मान,
फौजी बन निभाया हर अरमान।

फिर जीवन में वो आई,
मेरी संगिनी, मेरी परछाई।
उसकी हँसी में घर बसाया,
उसके संग हर पल सजनाया।

नन्हे कदमों ने घर सजाया,
हर सुबह ने गीत सुनाया,
बच्चों की हँसी में जीवन खिला,
हर दुःख भी जैसे दूर चला।

धीरे-धीरे वक़्त गुज़रा,
माँ-बाप ने विदा कहा,
घर का एक कोना चुप रहा,
दिल का एक हिस्सा सूना रहा।

फिर संगिनी भी चली गई,
एक अधूरा गीत छोड़ गई,
पर उसकी यादें सदा रहीं,
हर साँस में उसकी धड़कन रही।

बच्चे अब अपने जीवन में हैं,
पर प्यार उनका दिल में है।
कभी अकेलापन आँसू बन जाता,
फिर खुद से कहता हूँ —
“मजबूत रहो, यही जीवन सिखाता।”

अब भी मुस्कुराता हूँ मैं,
कभी कल पर, कभी आने वाले कल पर,
क्योंकि ज़िंदगी यही कहती है —
“प्यार नहीं मिटता, बस रूप बदलता है।“